

**श्री नीरज शेखर** (उत्तर प्रदेश): सर, मैं माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

**Alleged derogatory reference to Mahatma Gandhi in class Tenth  
English text book in Madhya Pradesh**

**श्री संजय सिंह** (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली): मान्यवर, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के बारे में मध्य प्रदेश में, एक किताब में अपमानजनक शब्दों का प्रयोग हुआ है, मैं आज उसी विषय को लेकर खड़ा हुआ हूँ।

मान्यवर, तीन दिन पहले मुझे एक समाजवादी चिंतक, आदरणीय रघु ठाकुर जी का पत्र मिला। उन्होंने बताया कि मध्य प्रदेश के अंदर हाई स्कूल में अंग्रेजी की एक किताब में पूछा गया, सुबुद्धि और कुबुद्धि की विशेषताएं बताएं? सुबुद्धि की विशेषता में कुछ-कुछ लिखा गया है, लेकिन कुबुद्धि की विशेषताओं में जो लिखा गया है, उसमें कहा गया - 'एक ऐसा व्यक्ति, जो शराब पीने वाला है, एक ऐसा व्यक्ति, जो मंद बुद्धि का है, एक ऐसा व्यक्ति, जो दुष्ट प्रवृत्ति का है और इसमें उसकी तुलना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी से की गई है। ...**(व्यवधान)**... यह किताब पूरे मध्य प्रदेश के अंदर बांटी गई है। बहुत अफसोस और पीड़ा के साथ मैं आपके सामने यह बात कह रहा हूँ। आज जब पूरी दुनिया राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का लोहा मान रही है, जब हमारे देश की सरकार उनकी 150वीं जयन्ती पर, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के विचारों को लेकर पूरे वर्ष भर, देश भर में आयोजन कर रही है, ऐसे समय में कभी इज़राइल की एक कंपनी शराब की बोतल पर गांधी जी का फोटो छाप देती है, कभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हत्यारों को महिमामंडित किया जाता है या फिर किताबों में, पाठ्यक्रमों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बारे में भ्रामक प्रचार किया जाता है। यह हम सबके लिए बहुत शर्मनाक बात है और बहुत चिंता का विषय है। ऐसे मामलों में सख्त से सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। जो भी लोग इसके लिए दोषी हैं, उनकी जांच करके, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई हो।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि इस विषय का पता लगाया जाए और पूरी जांच कराई जाए। ...**(व्यवधान)**... दूसरा, मैं आपके माध्यम से यह अनुरोध भी करूंगा कि आज गांधी जी के विचारों को पूरे देशभर में फैलाने की जरूरत है। गांधी जी कहते थे, 'अगर एक आंख के बदले दूसरी आंख फोड़ने की होड़ में लग जाओगे, तो पूरी दुनिया अंधी हो जाएगी।' गांधी जी कहते थे, 'प्रकृति के पास सबको देने के लिए सबकुछ है, पर्याप्त है, लेकिन एक व्यक्ति के लालच को पूरा करने के लिए कुछ भी नहीं है।' गांधी जी के ऐसे विचारों को देश भर में फैलाने के लिए हमें अभियान चलाना चाहिए और उनके अपमान को रोकना चाहिए।

**प्रो. राम गोपाल यादव** (उत्तर प्रदेश): सर, मैं माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

**श्रीमती विप्लव ठाकुर** (हिमाचल प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूँ।

**SHRI K.T.S. TULSI** (Nominated): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

**श्री सकलदीप राजभर**: सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

**SHRI K. SOMAPRASAD** (Kerala): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

**SHRIMATI JAYA BACHCHAN** (Uttar Pradesh): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

**SHRI ABIR RANJAN BISWAS**: Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

**श्री संभाजी छत्रपती** (नाम निर्देशित): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

**प्रो. जोगेन चौधरी** (पश्चिमी बंगाल): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

**श्री रवि प्रकाश वर्मा** : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

**श्री जावेद अली खान** (उत्तर प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

†جناب جاوید علی خان (اُتر پردیش) : سر، میں بھی مائنے ممبر کے ذریعے اٹھائے گئے موضوع سے خود کو سمبڈھ کرتا ہوں۔

**DR. SONAL MANSINGH** (Nominated): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

**SHRI JOSE K. MANI** : Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

---

†Transliteration in Urdu script.

SHRIMATI SHANTA CHHETRI : Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

**Lack of welfare benefits to people of Chit Mohal in West Bengal**

SHRI P. BHATTACHARYA (West Bengal): Sir, I would like to bring to your kind notice a very sensitive issue about some of the enclaves, known as in Chit Mohal in Bengal, in India and in Bangladesh. In accordance with steps agreed to between India and Bangladesh during Prime Minister, Shri Narendra Modi's visit to Bangladesh on 6th and 7th June, 2015, Bangladesh enclaves in India and Indian enclaves in Bangladesh shall stand physically transferred to the other country with effect from the midnight of 31st July, 2015. There are 111 Indian enclaves in Bangladesh and 51 Bangladeshi enclaves in India, which are to be exchanged, pursuant to the 1974 Land Boundary Agreement and ratification of the 2011 Protocol Instrument, during Prime Minister, Shri Modi's visit. The Prime Minister of our country and the Prime Minister of Bangladesh entered into the Agreement that all the enclaves be transferred. But some problems still existed in this area, namely, Chitmahal area, which I would like to bring to your kind notice and to the notice of the Foreign Minister. Sir, still the border between India and Bangladesh — this is for your kind information — is highly critical of this bilateral relationship. It is difficult to manage it on account of its sheer length. This was the most important bilateral initiative between Bangladesh and India, which attempted to resolve the long-standing border dispute that arose at the time of partition in 1947, by means of 2015 Land Boundary Agreement (LBA) and exchange of enclaves. It shows the advance positions between the two countries. But what is happening is that, the enclaves have already been transferred but the boundary between India and Bangladesh has not yet been settled. As a result of this, some confusion is still existing and people from this side are going to that side without any hesitation. So, this is a big problem.

**Need to reserve 25 per cent seats in National Institutes for local State students**

SHRI G.C. CHANDRASHEKHAR (Karnataka): Sir, I would like to bring to your kind notice our request to reserve 25 per cent of the seats in all national institutions for the respective State students. As you are aware, earlier education was State subject but later this was brought under the Concurrent List. Unfortunately, in the recent days, too much centralising the education system and trying to take away all the rights of the States is very dangerous.